चाँद से थोड़ी-सी गप्पें

पाठ का सार / प्रतिपाद्य -
प्रस्तुत पाठ 'चाँद से थोड़ी गप्पें' के लेखक 'शमशेर बहादुर सिंह' जी हैं। पाठ में एक छोटी सी बच्ची के मनोभावों को चित्रित किया गया है। वह चाँद से कहती है कि चाँद का आकार गोल है परंतु फिर भी वह तिरछे लगते हैं। उसे तारों से भरा हुआ आसमान चाँद की पोशाक लगता है। उसे लगता है कि चाँद आसमान रूपी चादर ओढ़े हुए है। उसे चाँद खूब गोल-मटोल, गोरा चिट्टा और अपना मुहँ खोले हुए प्रतीत होते हैं। चाँद के आकार का बढ़ना और घटना एक प्राकृतिक नियम है; परंतु वह उसे एक बीमारी मानती है। उसे लगता है चाँद को यह बीमारी लग गयी है इसलिए वह जब बढ़ते हैं तो बढ़ते ही रहते हैं जब तक पूरी तरह से गोल न हो जाएँ और जब घटते हैं तो घटते ही रहते हैं। यह प्रक्रिया निरंतर चलती ही रहती है। उसे यह नहीं पता कि यह प्रकृति का नियम है।

चाँद की विशेषताएँ -
(1) परिवर्तनशील - चाँद का आकार निरंतर परिवर्तनशील है। चाँद हर दिन बढ़ता या घटता रहता है।
(2) गोल-मटोल – चाँद का आकार जब पूरा बढ़ जाता है तो वह गोल नज़र आता है।
(3) गोरा - चिट्टा (चमकीला) - चमकीला होने के कारण चाँद को गोरा-चिट्टा कहा गया है।

कविता की भाषा शैली -
(1) कविता में सरल और सहज भाषा का प्रयोग किया गया है।
(2) प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण किया गया है।
(3) बालमन की कल्पनाशीलता को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

पाठ का उद्देश्य -
(1) प्रस्तुत पाठ में बच्चों की मनोदशा का सुन्दर चित्रण किया गया है।
(2) कविता के माध्यम से चाँद की विशेषताओं को प्रस्तुत किया गया है।

पाठ का संदेश -
प्रस्तुत पाठ में कवि ने बहुत सुन्दर तरीके से चाँद के विषय पर आवश्यक जानकारियाँ दी है। चाँद पूर्णिमा के दिन पूरा गोल होता है। फिर धीरे-धीरे छोटा होने लगता है और एक दिन बिलकुल ही गायब हो जाता है। उस दिन को हम अमावस्या कहते हैं।